Result Mitra IAS/PCS Daily Magazine Content

चीन की यारलुंग त्सांगपो जल विद्युत परियोजना

हालिया संदर्भ :

- हाल ही में 25 दिसंबर 2024 को चीन ने तिब्बत में यारलुंग त्सांगपो (जंगबो) नदी पर दुनिया की सबसे बड़ी जल विद्युत परियोजना के निर्माण को मंजूरी दी है।
- इस परियोजना के पूरा होने पर यह दुनिया की सबसे बड़ी पनबिजली परियोजना 60,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन करेगी, जो वर्तमान में मध्य चीन में यांग्त्जी नदी पर बनाई गई "थ्री गोरजेस बांध" परियोजना से लगभग तीन गुना अधिक बिजली उत्पादन करने में सक्षम होगी।
- तिब्बत के कैलाश पर्वत के मानसरोवर झील से निकलने वाली यारलुंग त्सांगपो (जंगबो) नदी, भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य में "सियांग नदी" के रूप में प्रवेश करती है, जो आगे चलकर असम में दिबांग और लोहित जैसी सहायक नदियों से जुड़कर यह शक्तिशाली "ब्रह्मपुत्र" नदी के रूप में जानी जाती है।
- 2900 किलोमीटर लंबी यह नदी भारत में अरुणाचल प्रदेश के "गेलिंग गांव" में प्रवेश करती है और असम घाटी के माध्यम से ब्रह्मपुत्र नदी के रूप में असम में प्रवेश करती है।
- दक्षिण–पश्चिम में यह नदी "जमुना" के नाम से बांग्लादेश में बहती हुई दक्षिण में बंगाल की खाड़ी में गंगा नदी के साथ विशाल डेल्टा बनाते हुए विलुप्त हो जाती है।

➢ चीन की यारलुंग सांगपो परियोजना क्या है ?

- चीन की यारलुंग सांगपो परियोजना चीन की 14वीं पंचवर्षीय परियोजना (2021–2025) में उल्लेखित एक जलविद्युत परियोजना है जिसे यारलुंग सांगपो नदी का भारत के अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने से पहले "मेडोग काउंटी" नामक यूटर्न पर बनाया जा रहा है।
- चीनी सरकार के अनुसार उनकी यारलुंग सांगपो जल विद्युत परियोजना चीन को पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों से दूर जाने और वर्ष 2060 तक उसकी शुद्ध कार्बन तटस्थता लक्ष्य हासिल करने में मदद करेगा।
- इस परियोजना के लिए लक्षित यारलुंग सांगपो का क्षेत्र ऊंचे पहाड़ों से इसकी सीधी ढलान के कारण इसे पनबिजली उत्पादन के लिए आदर्श बनाता है।
- लगभग 137 अरब डॉलर की लागत से बनने वाली यह पनबिजली परियोजना चीन को सालाना 30 करोड़ मेगावाट बिजली प्रदान करेगी।
- चीन द्वारा इस परियोजना की घोषणा वर्ष 2021 में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा तिब्बती स्वायत्तशासी इलाके के यात्रा के दौरान की गई थी।

Result Mitra

➢ इस परियोजना से भारत के लिए विशेष चिंताएं क्या है ?

- चीन जिस तरह से बड़े पैमाने पर यारलुंग सांगपो नदी पर बुनियादी ढांचा परियोजना बना रहा है वह इन क्षेत्रों में रहने वाले लाखों लोगों, उनकी आजीविका और पारिस्थितिकी को प्रभावित कर सकती है।
- चीन द्वारा यारलुंग सांगपो नदी के जिस इलाके में इस परियोजना को स्थापित किया जा रहा है वहां यारलुंग सांगपो नदी अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने से पहले यूटर्न लेती है, ऐसे में वहां पानी के प्रवाह को परियोजना के लिए रोकना भारत और बांग्लादेश के लिए खासकर जब बरसात नहीं होती है, के मौसम में सूखे की स्थिति उत्पन्न कर सकती है।
- इसके अलावा अगर इस नदी पर बांध के लिए बनाए जा रहे विशाल जलाशय से अगर चीन पानी छोड़ देता है, तो अरुणाचल प्रदेश का यिंगकियोंग प्रांत पूरी तरह से जलमग्न हो जाएगा तथा इस इलाके में बाढ़ जैसी हालात उत्पन्न हो जाएगी।
- भारतीय विदेश मंत्रालय द्वारा चीनी पक्ष से इस परियोजना के तहत यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया है कि यारलुंग सांगपो नदी की अपस्ट्रीम क्षेत्रों में गतिविधियों से ब्रह्मपुत्र के डाउनस्ट्रीम राज्यों के हितों को नुकसान न पहुंचे।
-

Result Mitra

➢ सीमा पार नदियों पर भारत और चीन के बीच क्या समन्वय तंत्र है ?

- भारत और चीन के बीच सीमा पार नदियों पर सहयोग के लिए एक व्यापक समझौता ज्ञापन है जो ब्रह्मपुत्र और सतलज पर दो अलग-अलग समझौता ज्ञापन के रूप में है।
- हर 5 वर्ष में नवीकरणीय ब्रह्मपुत्र समझौता ज्ञापन 2023 में समाप्त हो गया है।
- इस व्यापक MOU पर वर्ष 2013 में हस्ताक्षर किए गए थे।
- भारत सरकार की वेबसाइट के अनुसार इस समझौता ज्ञापन के तहत कोई गतिविधि नहीं की जा रही है।

- *** भारत और चीन के बीच सीमा पार नदियों पर इन समन्वय तंत्र के अलावा "अंतरराष्ट्रीय जलधाराओं के गैर–नेविगेशनल उपयोग" पर 1997 की संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन एक भूमिका निभा सकती है।
- हालांकि अंतरराष्ट्रीय जलधाराओं के गैर–नेविगेशनल उपयोग पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन का न ही भारत और न ही चीन हस्ताक्षरकर्ता देशों में शामिल है।
- अंतर्राष्ट्रीय जलधाराओं के गैर–नेविगेशनल उपयोग पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन के ढांचा के तहत नदियों के ऊपरी तटवर्ती क्षेत्र में किसी भी प्रकार के निर्माण की खुली छूट नहीं है एवं अगर इस प्रकार का कोई निर्माण कार्य होता है तो यह महत्वपूर्ण है कि एक देश की कार्यवाही दूसरे देश को नुकसान नहीं पहुंचाए।
- भारत ने जब भी चीन की इस तरह की किसी भी परियोजना पर चिंता जताई है तो चीन की मानक प्रतिक्रिया मुख्य रूप से इस तरह की परियोजनाओं को "रन–ऑफ–द–रिवर" परियोजना के रूप में वर्णित किया गया है जिसका अर्थ है कि इस परियोजना में नदियों के पानी का बड़ा संचय शामिल नहीं है।

➢ यारलुंग सांगपो और इसका ग्रेट बेंड :

- यारलुंग सांगपो नदी तिब्बत के पुलन काउंटी में हिमालय के उत्तरी ढलान पर जीमायांगजोंग ग्लेशियर से निकलती है।
- यारलुंग सांगपो नदी का ग्रेट बेंड जहां पर चीन द्वारा जल विद्युत परियोजना बनाई जा रही है, 505 किलोमीटर की लंबाई तक फैला हुआ है जिसकी अधिकतम गहराई 6009 मीटर है।
- दुनिया की सबसे बड़ी घाटी के रूप में यह क्षेत्र हिंद महासागर को तिब्बती पठार के दक्षिण–पूर्व से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण जलवाष्प और भौगोलिक गलियारे के रूप में कार्य करने के साथ तिब्बती पठार को दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप से जोड़ने के लिए जाना जाता है।
- यारलुंग सांगपो नदी के ग्रेट बेंड का निर्माण भारतीय प्लेट और यूरेशियन प्लेट के बीच टकराव का परिणाम है।

- * ग्रेट बेंड क्षेत्र अभी भी भूगर्भीय रूप में नया है जो कई भू–वैज्ञानिक तनावों और भूकंपीय गतिविधियों से प्रभावित रहा है।
- 1950 के दशक में 8.0 तीव्रता का भूकंप और 2000 की शुरुआत में ग्रेट बेंड क्षेत्र में बड़े भूस्खलन के कारण इसके निकले तंत्रों में भयंकर बाढ़ आ गई थी, जिससे लाखों लोग प्रभावित हुए थे।

MCQ–1 : चीन की यारलुंग सांगपो परियोजना के बारे में निम्न कथनों पर विचार करके सही विकल्प चुने–

कथन–1 : चीन की यारलुंग सांगपो परियोजना अपने निर्माण के बाद दुनिया की सबसे बड़ी जल विद्युत परियोजना होगी।

कथन–2 : चीन की इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य चीन को पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर अपनी निर्भरता कम करना है।

a) कथन 1 और 2 दोनों सही है।
b) केवल कथन 1 सही है।
c) केवल कथन 2 सही है।
d) दोनों कथन गलत है।

Ans.–(a)

हम आपको रिजल्ट देने आये हैं.
Result Mitra
1- UPSC(IAS) COMPLETE GS -5999 ₹.
2- NCERT for IAS/PCS -2499 ₹
3- ESSAY for IAS/PCS- 2199 ₹
4- UPSC PRELIMS TEST SERIES - 1399 ₹
5- सभी राज्यों के लिए टेस्ट सीरीज - 1399 ₹
कोर्स या Test Series के लिए
WhatssApp कीजिये
9235313184, 9235446806